तेरे मन में राम, तन में राम ....

तेरे मन में राम, तन में राम, रोम–रोम में राम रे ।
राम सुमिर ले, ध्यान लगा ले, छोड़ जगत के काम रे ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम–राम–राम ।।
माया में तू उलझा–उलझा, दर–दर धूल उड़ाए ।
अब करता क्यों मन भारी, जब माया साथ छुड़ाए ।
दिन तो बीता दौड़–धूप में, ढल जाए ना शाम रे ।
राम सुमिर ले, ध्यान लगा ले, छोड़ जगत के काम रे ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम–राम–राम ।।
तेरे मन में राम, तन में राम ....
तन के भीतर पाँच लुटेरे, डाल रहे हैं डेरा ।
काम, क्रोध, मद, लोभ व मोह ने, तुझको ऐसा घेरा ।
भूल गया तू राम–रटन, भूला पूजा का काम रे ।
राम सुमिर ले, ध्यान लगा ले, छोड़ जगत् के काम रे ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम–राम–राम ।।
तेरे मन में राम, तन में राम ....
बचपन बीता खेल–खेल में, भरी जवानी सोया ।
देख बुढ़ापा सोचे अब तू, क्या पाया क्या खोया ।
देर नहीं है अब भी बंदे, ले ले हरि का नाम रे ।
राम सुमिर ले, ध्यान लगा ले, छोड़ जगत के काम रे ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम–राम–राम ।।
तेरे मन में राम, तन में राम ....

हरि का गुन अति कठिन है, ऊंचा बहुत अकथ्थ।
सिर काटी पग तर धरै, तब जा पहुंचे हथ्थ।।